Vol. 10, Issue-1 (January 2021) pp. 46- 53 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

भारत रत्न पं. रविशंकर जी द्वारा रचित नव निर्मित रागों की विवेचना

प्रगति द्विवेदी
शोध छात्रा

डॉ. नीतू गुप्ता
शोध पर्यवेक्षक

संगीत विभाग
दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान, दयालबाग़,
आगरा, उत्तर प्रदेश
Email: pragatidwivedi346@yahoo.in

शोध प्रपत्र सार

भारतीय संगीत, रागदारी संगीत के नाम से भी जाना जाता है, कारण है यहां की असंख्य राग रचनाएं और उसके वैविध्यपूर्ण प्रस्तुतिकरण की शैलियाँ. भारतीय संगीत की एक और विशेष बात यह है कि भारतीय संगीत प्रणाली जहां पारंपरिक है, नियमों और बंधनों दृढ़ कही जाने वाली है, तो वहीं यह पद्धति कलाकारों को स्वच्छंदता प्रदान कर उन्हें स्वयं की उपज एवं मनोधर्म का पालन करने की आज़ादी भी प्रदान करती है. नव राग निर्मिति भी इसी उपज और मनोधर्म को प्रदर्शित करने का एक माध्यम है.

यूं तो भारतीय संगीत पद्धति में रागों की संख्या अपरिमित है तथापि संगीतकारों को नए राग की परिकल्पना गढ़ते प्रायः देखा गया है. नवीन राग निर्माताओं की इस लड़ी में भारतीय संगीत के कई दिग्गज कलाकारों और मनीषियों का नाम जुड़ता चला जा रहा है. गायक हों या वादक, सभी नव राग निर्मिति के माध्यम से अपनी कल्पनाशक्ति की अनूठी झलक जन मानस के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रहे है. इस श्रंखला में गायकों में पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी, पं. श्रीकृष्णनारायण रातनजनकर तथा गायको में उ. अलाउद्दीन खां, पं. पन्नालाल घोष, तथा उ. अमजद अली खां आदि नाम उल्लेखनीय हैं. विश्व संगीतकार के रूप में प्रसिद्ध, सितार के पर्याय पं. रविशंकर जी भी इस श्रंखला के एक अभिन्न अंग हैं. सर्वविदित है कि संगीत जगत के प्रत्येक परिशिष्ट में उनके योगदान की सुगन्ध है, अतः नवीन राग निर्माण में भी आपने अप्रतिम योगदान से भारतीय राग परंपरा को समृद्ध किया है.

अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पंडित रविशंकर जी द्वारा रचित कतिपय नवीन रागों का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है.

प्रस्तावना :- समय समय पर संगीत में होने वाले नवीन प्रयोगों से संगीत के तत्सम रूप और सांगीतिक अभिव्यक्ति की शैलियों मे क्रांतिकारी परिवर्तन होते आ रहे हैं फिर भी उन प्रयोगों से संगीत रूपी दीपक का प्रकाश तनिक भी धूमिल नहीं हो पाया है। भारतीय संगीत के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि संगीत की आधारशिला - राग संगीत, में क्रांतिकारी एवं महत्वपूर्ण परिवर्तन समय समय पर होते रहे हैं।

परिवर्तनशीलता से नवीनता का निर्माण होता है और चूंकि भारतीय संगीत में रागों के माध्यम से कलाकार की प्रतिभा, कल्पना और साधना स्वरात्मक सौंदर्य के रूप में व्यक्त होती है इसी कारण रागों में नित नूतनता आना स्वाभाविक ही है। नवीन रागों के आगमन से भारतीय संगीत संपदा में वृद्धि तो होती ही है साथ ही संगीत कलाकारों की रचनात्मक प्रतिभा व मौलिक कल्पनाशक्ति का भी आभास मिलता है।

राग निर्मिति के नियमों में किन्हीं दो अथवा अधिक रागों के सम्मिश्रण द्वारा अथवा राग के स्वर या उसके रूप परिवर्तन द्वारा एक नूतन राग का निर्माण हो सकता है, परंतु यह एक कुशल एवं सिद्धहस्त कलाकार द्वारा ही संभव है । उ. अलाउद्दीन खां, पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी, पं. देवव्रत चौधरी, उ. अमज़द अली खां आदि कलाकार नवीन राग निर्माताओं की सूची में प्रमुख हैं। श्रेष्ठ कलाकार की समस्त विशेषताओं से युक्त पं. रविशंकर जी का नाम भी सफल सृजनकर्ताओं में परिगणित किया जाता है।

पं. रविशंकर :- पं. रविशंकर जी अद्वितीय सितार वादक थे । अपने अदम्य उत्साह, लगन, प्रेम तथा प्रतिभा के कारण आपने सितार पर अधिकारपूर्वक वादन का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया। भारतीय संगीत के वरेण्य शिल्पी, महाज्ञानी उस्ताद अलाउद्दीन खां ने पंडित जी के व्यक्तित्व को नया निखार दिया। पंडित जी के अंतर में सृजन का आग्रह भी प्रबल था। वे सर्वदा कुछ नया कर दिखाने के लिए उत्सुक रहते थे। अपने गुरु से प्राप्त नवसृजन की उत्कंठा ने ही उन्हें 1945 में अमर भारत के लिए संगीत की रचना के लिए प्रेरित किया। बाद में उन्हें आकाशवाणी ऑकेस्ट्रा का प्रमुख संचालक बनाया गया। इस आंतरिक व्यग्रता ने उन्हें नए राग बनाने के लिए प्रेरित किया। ये राग हैं - रसिया, बैरागी, गंगेश्वरी, जोगेश्वरी, कामेश्वरी, रंगेश्वरी, परमेश्वरी, यमन मांझ, तिलकश्याम मोहनकौंस,पलासकाफी पूर्वी कल्याण, अहीर ललित, चारूकौंस, भवानी भैरव, नट भैरव, कौंसी तोड़ी, पंचम से गारा आदि। [1]

नव राग रचना :- नव प्रयोगों की दृष्टि से आप वादन और प्रस्तुति दोनों में ही नवीन प्रयोग करते रहे हैं - चाहे वह सितार में प्रत्यक्ष परिवर्तन हो या फिर एकल प्रस्तुति के स्थान पर जुगलबंदी की प्रस्तुतियां हों। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में पं. रविशंकर जी द्वारा रचित कतिपय नवीन राग-रूपों का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो इस प्रकार हैं-

1. तिलक श्याम, **2.** मोहन कौंस, **3.** नटभैरव, **4.**जोगेश्वरी, **5.** बैरागी

उपर्युक्त रागों का परिचय इस प्रकार है –

राग तिलकश्याम

थाट- कल्याण

वादी-पंचम/ गंधार

संवादी- षडज/ निषाद

विकृत स्वर- तीव्र मध्यम

वर्जित स्वर- आरोह में गंधार तथा धैवत

जाति- औडव - संपूर्ण

गायन समय- सांयकाल

आरोहः- नि स रे म॑ प नि सं

अवरोहः- सं नि ध प, म॑ ध प, म ग रे ग स

यह राग पंडित जी द्वारा सन् 1948 में निर्मित किया गया था। यह राग अत्यंत मधुर राग है तथा और अधिक सुंदर प्रतीत होता है जब इसे ठुमरी अंग से प्रस्तुत किया जाता है। पंडित जी द्वारा रचित रागों में से यह राग बहुत अधिक प्रचलित हुआ।

प्रस्तुत राग में 'रे म॑ प नी सां' स्वर- संगति में राग श्यामकल्याण व शुद्ध सारंग का आभास होता है तथा रे म म प नी सां स्वर-संगति में राग तिलक का आभास होता है।

पंडित जी ने तिलक कामोद व श्याम कल्याण का मिश्रण करके राग तिलक श्याम की रचना की है। इस राग में दोनों मध्यम का प्रयोग व शेष सभी शुद्ध स्वर हैं। तीव्र मध्यम का प्रयोग इस राग में अधिक हुआ है। इसके आरोह में गंधार धैवत वर्जित है अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग है इस प्रकार इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। इस राग को कल्याण थाट

के अन्तर्गत रख सकते हैं। प्रस्तुत राग में दो रागों का मिश्रण किया गया है, अतः नामकरण में भी उन दोनों रागों के नाम की संधि करके उपयोग किया गया है।

यहां पंडित रविशंकर जी के द्वारा प्रस्तुत राग की प्रस्तुति का यूट्यूब लिंक पाठकों की सुरुचि और सुलभता के लिए प्रस्तुत है[1] - https://www.youtube.com/watch?v=fNaMGxl6pGA

राग मोहनकौंस

थाट- भैरवी

वादी- मध्यम

संवादी- षडज

विकृत स्वर- धैवत और निषाद कोमल

वर्जित स्वर- आरोह में रिषभ पंचम तथा अवरोह में पंचम

जाति- औडव षाडव/ औडव संपूर्ण

गायन समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर

आरोहः- स ग म ध नि सं

अवरोहः- सं नि ध म ग स

स्वरूपः- स ग म, - ग नि ध ^नि ध^, मग रे -ग म ^ग^ म -स। ग- नि ^धनि^ ध ग म ^नि^ ध निसं-संगंमं ग ^गं^मंसं, धनि ^नि^ ध म ग नि ^नि^ ध- मगरेगम-ग^ग^मस ।। [2]

पं0 रविशंकर जी ने इस राग का निर्माण सन् 1948 में महात्मा गाँधी जी के मृत्यु के बाद किया। उस समय आकाशवाणी पर तबले के बिना गायन-वादन हो रहा था। पं0 रविशंकर उनकी याद में कुछ वादन कर ही रहे थे, तभी उनके मस्तिष्क में कुछ स्वर प्रकट हुए उन्होंने गाँधी जी के नाम के अनुरूप गाँधी में से गंधार, निषाद एवं धैवत निकाल कर इन्हीं तीन स्वरों में निषाद व धैवत को कोमल कर दिया व गंधार को शुद्ध कर दिया।

इसका स्वरूप राग मालकौंस से मिलता है। कोमल गंधार के स्थान पर शुद्ध गंधार के प्रयोग से इस राग की निष्पत्ति होती है। इसमें रिषभ पंचम वर्ज्य हैं। इसका वादी स्वर मध्यम है, संवादी स्वर षडज है, जाति वक्र औड़व है। गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

पं. रविशंकर जी ने इस राग को कौंस अंग के अन्तर्गत रखा है। राग विस्तार के आधार पर इस राग में पंचम का प्रयोग न होने से अधिकतर मालकौंस का आभास होता है, किन्तु रे के विशिष्ट एवं अति अल्प अवरोहात्मक प्रयोग से तथा शुद्ध गंधार के प्रयोग से मालकौंस से बिल्कुल भिन्न हो जाता है।

यहां पंडित रविशंकर जी के द्वारा प्रस्तुत राग की प्रस्तुति का यूट्यूब लिंक पाठकों की सुरुचि और सुलभता के लिए प्रस्तुत है [2]- https://youtu.be/51jKaZsvKM0

राग नट भैरव

थाट- भैरव

वादी- मध्यम/ पंचम

संवादी- षडज

विकृत स्वर-धैवत कोमल

वर्जित स्वर- कोई नहीं

जाति- संपूर्ण

गायन समय- प्रातःकाल

आरोहः- स रे ग म प ध नि सं

अवरोहः- सं नि ध प म ग म रे स

प्रस्तुतराग नट व भैरव रागों के मिश्रण से निर्मित है। इसमें रेरे गग म नट तथा ग म धध प भैरव के स्वर समूह जोड़े जाते हैं। जाति वक्र संपूर्ण है। वादी मध्यम संवादी षडज है। गायन समय प्रातःकाल है।

पंडित जी द्वारा निर्मित नट भैरव सबसे अधिक प्रचलित व श्रुति मधुर राग है। पंडित जी ने महाराष्ट्र में एक ऐसा गायन सुना था जिसमें दोनों रिषभ का प्रयोग हुआ था। जिसमें पहले नट और बाद में भैरव राग को प्रदर्शित किया गया था। पंडित जी के ऊपर इसका इतना अधिक प्रभाव हुआ कि उन्होंने मात्र शुद्ध रिषभ को लेकर नट एवं भैरव अंग को मिश्रित करके बजाना प्रारम्भ किया। अतः इस प्रकार इस राग का यह स्वरूप पं. रविशंकर जी की ही देन है किंतु प्रस्तुत राग के विषय में कई मत भी प्रचलित है -
इस राग के पूर्वांग में नट तथा उत्तरांग में राग भैरव के स्वर समूह का प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में इस राग को 'हिजाज भैरव' के नाम से जाना जाता था। इस राग में शुद्ध रिषभ के प्रयोग के कारण यह राग भैरव के अन्य सभी

प्रकारों से भिन्न है। राग नट के स्वर इस राग में इस प्रकार प्रयोग किये जाते हैं। स रे रे ग म, रे रे स, स रे रे ग म, रे ग म प, स रे स इत्यादि, तथा - म प ध़ ध, नि सां ध़ ध, नि ध़ प, ये स्वर समूह भैरव के है। [3]

यहां पंडित रविशंकर जी के द्वारा प्रस्तुत राग की प्रस्तुति का यूट्यूब लिंक पाठकों की सुरुचि और सुलभता के लिए प्रस्तुत है[3] -https://www.youtube.com/watch?v=qZLA1bhBhcU

राग जोगेश्वरी

थाट- काफी
वादी- मध्यम
संवादी- षडज
विकृत स्वर- गंधार तथा निषाद कोमल
वर्जित स्वर- रिषभ तथा पंचम
जाति- औडव - औडव
गायन समय - सांयकालीन राग
आरोहः- स ग म ध नि सं
अवरोहः- सं नि ध म ग, म ग स,
आरोहावरोह- ध़नि़सगमधनि़सं । सं़निधमगमग़-स ।
(यह राग स्व. श्रीकृष्णनारायण रातांजनकर द्वारा निर्मित राग जोगेश्वरी से सर्वथा भिन्न है।) [4]

सन् 1969 में पं. जी द्वारा इस राग की अवतारणा की गई थी। प्रस्तुत राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षडज है। रिषभ और पंचम स्वर आरोह तथा अवरोह दोनों में पूर्णतया वर्जित है, अतः राग की जाति औड़व - औड़व है। यह एक सांयकालीन राग है। इसमें निषाद स्वर कोमल विकृत है और स ग स की संगति में राग जोग को दर्शाते समय मात्र ही, कोमल गंधार का प्रयोग इस राग में देखने को मिलता है। थाट की दृष्टि से इस राग को काफी थाट के अंतर्गत रखा जा सकता है।

इस राग की रचना, राग जोग में पंचम के स्थान पर धैवत के प्रयोग से हुई है। फलस्वरूप म ध नि सं में राग बागेश्वरी और रागेश्री की छाया आ जाती है अतः इसके आरोह तथा अवरोह में रे तथा प स्वर वर्जित हैं, आरोह में स ग स , नि़ ग़ स संगति जोग की है। अतः जाति औडव - औडव है। उपर्युक्त मिश्रण के कारण आपने इस राग को जोगेश्वरी की संज्ञा दी है। इस राग में वादी मध्यम तथा संवादी षडज है। गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

यह राग पूर्वांग में राग जोग सा ग म, ग म, सा ग सा, ग सा नि ,नि सा सा ग और उत्तरांग में रागेश्री ग म ध म, म ध ग म, ध नि सां, सां नि ध, नि ध म का मिश्रण है। यह एक मींड प्रधान, गंभीर वातावरण पैदा करने वाला राग है, जिसे तीनों सप्तकों में गाया - बजाया जा सकता है।

यहां पंडित रविशंकर जी के द्वारा प्रस्तुत राग की प्रस्तुति का यूट्यूब लिंक पाठकों की सुरुचि और सुलभता के लिए प्रस्तुत है [4]- https://www.youtube.com/watch?v=Lgi-C7tQ-LA

राग बैरागी

थाट- भैरव
वादी- मध्यम
संवादी- षडज
विकृत स्वर- रिषभ निषाद कोमल
वर्जित स्वर- गंधार तथा धैवत
जाति- षाड़व - औडव औडव
गायन समय- प्रातःकाल
आरोहः- स रे म प नि सं
अवरोहः- सं नि प म रे स
इस राग का निर्माण 1949 में हुआ था। जब पं. जी ने A.I.R. join किया था तब आपने इस राग को स्वरूप प्रदान किया था। इसे संगीत पत्रिका हाथरस में प्रकाशित भी किया गया था जिसमें पं. जी की बंदिश 'मन पंछी बावरा', ख्याल था। उसके बाद यह राग गायकों और वादकों के मध्य द्रुत गति से प्रचार में आ गया और बैरागी भैरव के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इस राग में रिषभ तथा निषाद कोमल हैं। गांधार एवं धैवत स्वर पूर्णतः वर्जित हैं अतः जाति औडव औडव है। इसका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षडज है। समय दिन का प्रथम प्रहर है।

षडज तथा मध्यम स्वरों पर न्यास करना राग की रंजकता बढ़ाता है। गायन समय प्रातःकाल है। इसके पूर्वांग में जोगिया तथा उत्तरांग में मध्यमादि सारंग का आभास मिलता है। किंतु जोगिया में धैवत और मध्यमादि सारंग में ऋषभ स्वर का प्रयोग होने के कारण बैरागी का अस्तित्व इन रागों से पृथक रहता है। कुछ गुणी जन इसमें गांधार का प्रयोग मींड तथा कण रूप में क्षम्य मानते हैं। यह पूर्वांगवादी राग है तथा इसकी प्रकृति मधुर शांत एवं गंभीर है। इस राग को प्रचार में लाने का श्रेय विश्व विख्यात सितार वादक पं0 रविशंकर को है। पकड़ - प़ नि रे - सा - नि प़ नि सा रे – सा। [5]

यहां पंडित जी के सुयोग्य शिष्य पं. शुभेन्द्र राव जी के द्वारा प्रस्तुत राग की प्रस्तुति का यूट्यूब लिंक पाठकों की सुरुचि और सुलभता के लिए प्रस्तुत है[5] - https://www.youtube.com/watch?v=bLIvpkwdacA

निष्कर्षः-

भारतीय शास्त्रीय संगीत में जहां बंदिशें हैं तथा परंपरागत गायन वादन की परिपाटी है वहीं भारतीय संगीत, कलाकार को मंच पर स्वच्छंद रूप से अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर प्रस्तुति और बढ़त करने की भी स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस स्वतंत्रता से ही नवीनता की सृष्टि के द्वार खुलते हैं और यही भारतीय संगीत के चिरकालिक लोकप्रिय होने का कारण है। इस श्रृंखला में नवीन रागों का भी महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि भारतीय शास्त्रीय संगीत रागदारी संगीत भी है अतः इन रागों और इनके निर्माताओं की उपादेयता और भी बढ़ जाती है, और बात जब पं. रविशंकर जी जैसे दिग्गज रचनाकार की हो तो यह कहना अवश्यम्भावी है कि उनके द्वारा रचित अधिकतर राग सुग्राह्य है तथा प्रचलित है, यह उनकी कुशलता तथा रचनाधर्मिता के लिए सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1) बहोरे, रविन्द्रनाथ. *भारतीय संगीत के प्रमुख स्तम्भ,* क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी - नई दिल्ली पृ सं. 187
2) गर्ग,लक्ष्मीनारायण. *पं. रविशंकर द्वारा नव निर्मित रागों का शास्त्रीय विवरण,*संगीत जुलाई 2005, पृ. सं. 48
3) झा, रामाश्रय. *अभिनव गीतांजलि, भाग -4*,संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015, पृ. सं. 51
4) गर्ग, लक्ष्मीनारायण. *पं. रविशंकर द्वारा नव निर्मित रागों का शास्त्रीय विवरण,* संगीत जुलाई 2005, पृ. सं. 47
5) तिवारी, ऋषीश्वर. संगीत पत्रिका -लक्षण संगीत अंक, जनवरी 1971, पृ. सं. 113

Webliography:

1. https://www.youtube.com/watch?v=fNaMGxl6pGA
2. https://youtu.be/51jKaZsvKM0
3. https://www.youtube.com/watch?v=qZLA1bhBhcU
4. https://www.youtube.com/watch?v=Lgi-C7tQ-LA
5. https://www.youtube.com/watch?v=bLIvpkwdacA